दैनिक भास्कर
रविवार, 01 अगस्त, 2021 लखनऊ

मूक हो रही है पर्यावरण सुरक्षा

'मिट्टी' समेटे है इतिहास

गीतांजलि सक्सेना

मिट्टी से जुड़े रहना दर्शाता है कि हम इसकी अहमियत जानते हैं। मिट्टी से बने हैं और उसी ने अस्तित्व को ढालना और निखारना सिखाया। अक्सर लोगों को यह जुमला कहते सुना है कि 'अरे किस मिट्टी के बने हो'। यह वाक्य आप के व्यक्तित्व की पहचान कराते हुए अपने आप में बहुत कुछ कह देता है। ऐसा ही है इसकी प्रकृति यही है। इसका दस्तूर भी यही है कि सांचे में ढालो, तो कलात्मक मूर्तियां बन जाती हैं। इन्हीं में रंग भर दो आकर्षित आकृतियां, तो कुम्हार के हाथों के मिट्टी के बर्तन, कुल्हड़ और घड़ों का रूप ले लेती है। दिलचस्प तो यही है कि देश की मिट्टी की सौंधी खुशबू का आनंद उठाना सम्भव भी हुआ इसी के सौजन्य से। यूं ही नहीं खाते हैं हम माटी की सौगंध। यही नहीं, अनेक प्राचीन सभ्यताएं मिट्टी के माध्यम से विकसित हुई हैं। उस काल में मिट्टी के घरों में रहकर जीवन निर्वाह किया करते थे। मिट्टी के बर्तन बनाने की कला पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुसार, सदियों पुरानी है, जिनका चलन उस दौरान उनकी जीवनशैली का हिस्सा रही थी।

सदियों पुरानी मिट्टी के घरों का दौर फिर से लौट रहा है। ऐसा लगता है कि महानगरों की भागदौड़ और शोरगुल में रहने वाले लोग अब सुकून तलाशने और मिट्टी के आशियाने बनाने की ओर रुख कर रहे हैं। मतलब वें फार्म हाउस और पर्यावरण अनुकूल (इकोफ्रेंडली) यानि मिट्टी के स्थायी घरों को बनाने की तकनीक को अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। इस ओर आकर्षित होना पर्यावरण की दिशा में अवश्य ही महत्वपूर्ण योगदान साबित होगा। मानवता की रक्षा के लिए पर्यावरण को संरक्षित करने के उद्देश्य से सस्टेनेबल (पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाने वाली सामग्री का इस्तेमाल) कर के घरों का निर्माण करना आवश्यक होगा। आने वाले समय में इन घरों को मुख्यधारा में लाना कई कारणों से ज्यादा नफा का ही रहा, बल्कि एक नयी सोच के पहलुओं की ओर इशारा भी करता है। भारत में मिट्टी की वास्तुकला में समृद्ध परंपरा है। देश का ग्रामीण क्षेत्रों में मिट्टी के इन घरों को टिकाऊ या मजबूत स्थायी घरों का वास्तविक स्वरूप में डालने के लिए निर्माण कार्य में उन तकनीक को शामिल व इस्तेमाल करना होगा, जिससे कि इन घरों को अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है। सच तो ये ही है कि भारत में सदियों पुरानी मिट्टी के घरौंदा बनाने वाली परंपरा धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है। इनका बदलता स्वरूप, जो कभी ग्रामीण घरों की पहचान हुआ करती थी, अब खतरे में है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में मिट्टी से निर्मित घरौंदे सुख, समृद्धि का प्रतीक के रूप में घरों की शोभा होती, तो शहरों में त्योहारों पर भगवान की प्रतिमा रखकर पूजा अर्चना करते थे। घरों के आंगन में मिट्टी के चबूतरे में तुलसी के पौधे का स्थान घर का सबसे पवित्र स्थान माना जाता था। आज हम आधुनिक समाज के नाम पर अपनी खोखली मानसिकता में ग्रसित होते जा रहे हैं और पुरानी परंपरा एवं सांस्कृतिक धरोहर को खोने की कगार पर खड़े हैं। दरअसल इन घरों के सकारात्मक लाभ व पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का खुलासा करते हुए ध्यान देने का प्रयत्न किया जा रहा है कि प्राकृतिक संसाधनों का सबसे बेहतरीन व अनमोल रत्न मिट्टी ही है। दुनियाभर के देशों ने प्राकृतिक संसाधनों को पुनरावृत्ति प्रक्रिया के माध्यम से मिट्टी के स्थायी घरों को, पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल और आरामदायक स्वीकारा है। भारत के कई राज्यों में इन घरों का निर्माण तेजी से बढ़ रहा है। स्थाई घरों के निर्माता सभी तकनीक का उपयोग करके स्थानीय मिट्टी की ईंटों और ठोस टिकाऊ सामग्रियों का इस्तेमाल करके घरों को बनाया जा रहा है।

प्राकृतिक मिट्टी के घरों को बनाने के लिए मुख्यतः चार तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है, जो कि जलवायु परिस्थितियों, स्थान और उसके आकार पर निर्भर करती है।

सिलः मिट्टी, गोबर, घास को चूने के मिश्रण को गूंथकर गांठें बनाई जाती हैं, जिनसे नींव और दीवारों का निर्माण किया जाता है। एडोब पद्धति से मिट्टी को सीमेंट के खाली बैग में सुखा कर ईंटें बनाई जाती हैं। मवेशी और डाबरू लकड़ी को चिपचिपे पदार्थ से थाप किया जाता है। रैम्ड अर्थ तकनीक में मिट्टी रेत और बजरी के मिश्रण को सख्त किया जाता है। ये घर सीमेंट से भी अधिक मजबूत होते हैं और प्रकृति आपदाओं जैसे भूकंप व जल-प्रतिरोधक ताकत रखते हैं और अगर आपदा आ भी जाये, तो जान माल का कम नुकसान होता है। मिट्टी के घर सर्दियों में सूरज की गर्मी सोख लेते हैं और गर्मियों में हवा से नमी को सोखते हुए ठंडा रखते हैं। प्रकृति में मिट्टी प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण घरों के निर्माण की लागत कम रहती है। मिट्टी की रिसाईकिलिंग (पुनर्पयोगी) पद्धति सदियों से मूक मिट्टी अपनी गुणवत्ता के साथ पर्यावरण की रक्षा कर रही है।

ये घर सीमेंट से भी अधिक मजबूत होते हैं और प्रकृति आपदाओं जैसे भूकंप व जल-प्रतिरोधक ताकत रखते हैं और अगर आपदा आ भी जाये, तो जान माल का कम नुकसान होता है।

मिट्टी के योगदान को इतिहास के पन्नों में झांक कर भी देखा जा सकता है। भारत की ऐतिहासिक धरोहरों में, राजस्थान का अजेय दुर्ग लौहागढ़ मिट्टी का किला, जो अपनी बनावट के लिए प्रसिद्ध है, जिसको सन 1733 में जाट शासक महाराजा सूरजमल ने बनवाया था। यह देश का एकमात्र किला है, जिस पर अंग्रेजों ने कई बार आक्रमण किए, लेकिन उन्हें हर बार हार का सामना करना पड़ा और फतह नहीं कर पाए। दुनियाभर की सभ्यताओं में मिट्टी के किले का वर्णन मिलता है। मोरक्को में 1000 वर्षों पुराना केसर किला तो नील घाटी में 6000 साल पुराने गुंबद, मेहराब व बहुमंजिला इमारतों का जिक्र किया हुआ है। ऐसे ही एक किला अलजाहिली, जो यूएई की राजधानी आबूधाबी के शहर अलऐन शहर में है, जिसे यहां के शासक शेख जायदबिन खलीफा द फर्स्ट ने 19वीं शताब्दी में इस क्षेत्र में रहने वाली जन-जातियों को नियंत्रित करने के लिए किले का निर्माण करवाया था। यह देश के सबसे बड़े ऐतिहासिक किलों में से है। अतीत के पन्नों को पलटें, तो ज्ञात होता है कि पुर्तगाली और ब्रिटिश सेना के आक्रामक की रक्षा के लिए किले का निर्माण, नियंत्रण और निगरानी करने के उद्देश्य से बनाया गया था। युद्ध में घेराबंदी का सामना करने के लिए किले में सभी आवश्यक सुविधाओं के अलावा और सैन्य सामग्री आदि रखने की व्यवस्था रहती थी। अधिकांश समय शासक अपने परिवार के साथ यहीं रहते थे। मिट्टी से बने इस किले में ग्रीष्मकालीन निवास भी होता था। शासक यहीं रहकर प्रशासनिक मामलों का निर्देशन भी करते थे।

अन्य किलों की तरह भवन की दीवारें, छतें जो कि परतों में लकड़ी, सूखे ताड़ के पत्तों और मिट्टी व उसकी मीनारों, किले की बाड़ और सभी को एक ही निर्माण सामग्री, जिसमें धूप में सुखाई मिट्टी की ईंटें और पत्थरों से बनी हैं और इन्हें आपस में जोड़ने के लिए प्लास्टर का इस्तेमाल किया गया था। पृथ्वी के भौतिक गुणों, जिसमें शामिल पानी के महत्व, पांच खनिजों, कुछ विभिन्न निर्माण तकनीकें शामिल हैं। अलजाहिली किला देश की विरासत, इतिहास और संस्कृति व सभ्यता का केन्द्र बना हुआ है। दिलचस्प यह है कि देश का कला व संस्कृति विभाग सामाजिक और सांस्कृतिक बंधनों से मुक्त, विभिन्न राष्ट्रीयता के बीच दोस्ती, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देने की ओर सभी वर्गों के लिए यह एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया है।